Brainstorming for Motivating Sanskrit Teaching and Training in Haryana State organised by Haryana State Higher Education Council
Renowned Sanskrit experts, academicians and scholars were present to contemplate on Motivating Sanskrit Teaching and Training in Haryana.

Panchkula, 19th January
A brainstorming meet on Motivating Sanskrit Teaching and Training was organized by Haryana State Higher Education Council (HSHEC). The participants included country's renowned Sanskrit Experts, Academicians and Scholars from 3 generations.

While welcoming the participants to the session Prof. Brij Kishor Kuthiala, Chairperson of the council said that the goal is to achieve motivation for Sanskrit in academic and non-academic aspects of life. Prof. Kuthiala highlighted the importance of devotion and dedication towards Sanskrit. Sanskrit needs to be rejuvenated in the society and this open contemplation was for planning further steps for it. He added that Haryana State Higher Education Council is acting as a platform for motivating Sanskrit in the state and is eager to facilitate for further contemplation sessions for it.

Prof. Kuthiala, while setting the context of the workshop told that in a meeting with Hon'ble Chief Minister of Haryana it was decided that Sanskrit needs to be rejuvenated in Haryana. There have been many initiatives for promoting Sanskrit and there have been positive results, due to which today's meeting is also being held.

Prof. Kuthiala said that the outcomes of the deliberations of the session will be used to make policy documents for motivating Sanskrit teaching and training in the state. Prof. Kuthiala highlighted that Sanskrit is still used in our daily life through Mantra, phrases, etc. that we use daily. The clear benefit from promoting Sanskrit is that it is the key to the knowledge and science in our Grantha.

Distinguished Sanskrit experts and scholars like Dr. R. C. Mishra, IPS, Dr. Chandkiran Saluja, Director, Sanskrit Foundation, Smt. Shashi Prabha Kumar, Chairperson, IIAS, Prof. Shrinivasa Varakhedi, Vice Chancellor, Central Saskrit University, Prof. Kamkoti, Director, IIT Madras, Dr. R. B. Langyan, IAS (Retd.), Prof. Ravi Prakash Arya, MDU, Rohtak, etc. participated in the meeting in person and online; as also provided their valuable inputs in the session.

हरियाणा में संस्कृत शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रोत्साहन योजनाओं पर मुक्त चिंतन का आयोजन हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद् द्वारा किया गया.

संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वानों व शिक्षकों ने हरियाणा में संस्कृत शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रोत्साहन योजनाओं पर मुक्त चिंतन में भाग लिया.

पंचकूला, १९ जनवरी

संस्कृत शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रोत्साहन योजनाओं पर मुक्त चिंतन का आयोजन हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद् द्वारा किया गया। चिंतन में देश के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वानों व शिक्षकों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रो. बी.के. कुठियाला, अध्यक्ष, हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद् ने कहा हमारा उद्देश्य संस्कृत को जीवन के शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक पहलुओं में प्रोत्साहित करना है। प्रो. कुठियाला ने संस्कृत के प्रति श्रद्धा व समर्पण के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज समाज में संस्कृत को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। प्रो. कुठियाला ने बताया की इस चिंतन में सामने आये बिन्दु राज्य में संस्कृत शिक्षण व प्रशिक्षण को प्रोत्साहित करने की नीतियों को रूप देंगी।

प्रो. कुठियाला ने चिंतन की पृष्ठभूमि रखते हुए बताया की हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री के साथ बैठक में यह निर्णय लिया गया की हरियाणा में संस्कृत को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद् संस्कृत को प्रोत्साहित करने के लिए तत्पर है और आवश्यकता अनुसार आगे भी विमर्श आयोजित करती रहेगी। उन्होंने कहा संस्कृत के उत्थान हेतु कई कार्य पहले भी किये गए, जिनके परिणाम स्वरूप आज यह मुक्त चिंतन आयोजित किया गया है।

प्रो. कुठियाला ने बताया की हम आज भी संस्कृत का प्रयोग मन्त्रों व कुछ शब्दों में अपने आम जीवन में करते है, इसको आगे बढ़ने की ज़रुरत है। संस्कृत हमारे ग्रंथों में अनमोल ज्ञान व विज्ञान को समझने के लिए आवश्यक है।

मुक्त चिंतन में संस्कृत के कई विशेषज्ञ व विद्वानों ने व्यक्तिगत व ऑनलाइन भाग लिया, जैसे की डॉ. आर.सी. मिश्रा, आई.पी.एस., डॉ. चाँदकिरण सलूजा, निदेशक, संस्कृत फाउंडेशन, श्रीमती शशि प्रभा कुमार, अध्यक्ष, आई.आई.ए.एस., प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी, कुलपति, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रो. कामकोटि, निदेशक, आई.आई.टी. मद्रास, डॉ. आर.बी. लांग्यान, भा.प्र.से. (सेवानिवृत), प्रो. रवि प्रकाश आर्य आदि; और सत्र में अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान किए।